# राठ

## भारत की गौरवशाली देशी गोवंशीय विरासत

# प्रस्तावना

भारत की धरती पर गोवंश की अनेक विशिष्ट नस्लों ने सदियों से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके इतिहास, उत्पत्ति, स्वरूप, गुण और उपयोग का विवरण पुरानी पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, सर्वेक्षणों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में बिखरा हुआ है।

यह संकलन उसी प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत करने और हिंदी पाठकों के लिए सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास है। इसमें भारतीय गोवंश के इतिहास, पहचान और विशेषताओं से संबंधित जानकारी को मूल स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह संकलन किसी नस्ल का आधुनिक वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों में दर्ज उसके स्वरूप, विशेषताओं और इतिहास को आज के पाठक तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है।

॥ मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ॥

मूल स्रोत
पुस्तक: Indigenous Breeds of Cattle in Rajputana
लेखक: Major F. S. H. Baldrey
प्रकाशन वर्ष: 1911

पुस्तक की ऑनलाइन PDF प्रति: | www.surbhisewa.com

**अनुवाद संबंधी सूचना**

यह हिंदी पाठक संस्करण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहायता से तैयार किया गया है। किसी तथ्य अथवा अनुवाद में अंतर पाए जाने पर संबंधित मूल पुस्तक को ही अंतिम और प्रमाणिक स्रोत माना जाए।

# राठ गोवंश

मूल स्रोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

## राजपूताना के गोवंश-वर्गों में राठ का स्थान

बाल्ड्रे राजपूताना के गोवंश को 5 मुख्य वर्गों में बाँटता है। इनमें राठ को नागौरी और मेवाती से संबंधित, किंतु एक अलग प्रकार माना गया है। रिपोर्ट के अनुसार राठ और मेवाती राज्य के पूर्वी भागों में पाए जाते थे और स्वरूप में हरियाना से मिलते-जुलते थे, हालांकि लेखक उन्हें हरियाना से निम्न मानता है।

स्रोत-संदर्भ: अध्याय 1, मूल मुद्रित पृ. 1 | पीडीएफ पृ. 7.

## विशिष्ट क्षेत्र और भौगोलिक सीमा

स्थानीय लोगों द्वारा राठ को एक अलग प्रकार के रूप में पहचाना जाता था और यह लंबे समय से एक निश्चित भू-भाग तक सीमित था। पूर्व से पश्चिम इसकी सीमा बानसूर से नारनौल तक और उत्तर से दक्षिण मुंडावर से नारनौल तक बताई गई है। इसमें अलवर का बड़ा भाग और उसके उत्तर तथा पश्चिम से लगे राज्यों के कुछ हिस्से शामिल थे।

इन सीमाओं से बाहर जाते ही नस्ल नागौर, हरियाना और मेवात प्रकारों के साथ मिश्रित होने लगती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 19 | पीडीएफ पृ. 31.

## मिट्टी और भू-स्वरूप

इस क्षेत्र की मिट्टी गहरी रेतीली दोमट थी, जिसे स्थानीय रूप से “भूर” कहा जाता था। इसे बहुत कम नमी की आवश्यकता होती थी। सामान्य भू-भाग समतल था, लेकिन बीच-बीच में नीची पहाड़ियों की अनियमित शृंखलाएँ और समूह थे जो प्रायः बंजर तथा चट्टानों और पत्थरों से ढके रहते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 19 | पीडीएफ पृ. 31.

## पानी की व्यवस्था

पानी की आपूर्ति मुख्यतः तालाब से होती थी और पूरी तरह वर्षा पर निर्भर रहती थी। कुएँ कम थे। मीठा पानी बहुत गहराई पर मिलता था, जबकि उथला पानी खारा होता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 19 | पीडीएफ पृ. 31.

## मौसमी चारा और कामकाजी बैलों का राशन

चारे की व्यवस्था मौसम के अनुसार बदलती थी। सितंबर से फरवरी तक बैलों को मुख्यतः ज्वार या बाजरी की “कुट्टी” दी जाती थी; ज्वार को दोनों में बेहतर माना जाता था। इसे झाड़ बेर नामक झाड़ी की पत्तियों—“पाला”—के साथ मिलाया जाता था। अनुपात लगभग ¾ ज्वार कुट्टी और ¼ पाला था और कुल मात्रा 15–20 सेर प्रतिदिन प्रति बैल बताई गई है।

मार्च से अगस्त तक तूड़ी-खल, पाला तथा उड़द, मौठ और मूंग का भूसा मिलाकर लगभग 15 सेर दिया जाता था। अक्टूबर–नवंबर में हरी “करबी” (ज्वार के डंठल) और हरा ग्वार लगभग इसी मात्रा में दिया जाता था।

यदि शरद ऋतु की वर्षा अच्छी हों तो जनवरी–फरवरी में अनाज की जगह शलजम और दूसरी जड़ वाली फसलें दी जाती थीं। यह केवल संपन्न लोग, वह भी कठिन काम कर रहे पशुओं को, छोटी मात्रा—लगभग 1 सेर प्रतिदिन—देते थे। पाला घरों में और भूसा तथा चरी “बूंगे” अर्थात गुंबदाकार छप्पर वाले ढेरों में सुरक्षित रखे जाते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 19 | पीडीएफ पृ. 31.

# राठ बैल (Rath Bull)

सोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

(Plate VIII)

स्थान: बहरोड़, अलवर से लगभग 60 मील

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

## पशु-मेलों और बिक्री के केंद्र

राठ क्षेत्र में 3 प्रमुख पशु-मेले का उल्लेख है—बहरोड़, देहमी और अलवर। बहरोड़ मेला मई में और देहमी मेला अप्रैल तथा सितंबर में आयोजित होता था। पंजाब, उत्तर-पश्चिमी प्रांत और अवध से व्यापारी इन मेलों में आते थे। बड़ी संख्या में राठ पशु रेवाड़ी और पुष्कर में भी बेचे जाते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 20 | पीडीएफ पृ. 32.

## मेलों में पुरस्कार और भविष्य के प्रजनन-सांड

इन मेलों में प्रत्येक स्थान पर ₹150 तक पुरस्कार दिए जाते थे। लेखक मानता है कि इसे बढ़ाना लाभकारी होता। उस समय पुरस्कार केवल बैल को दिए जाते थे; बाल्ड्रे सुझाव देता है कि गायें और सांड को भी, विशेषकर 3 से 3½ वर्ष के सांड को, पुरस्कार दिए जाएँ ताकि उनमें से भविष्य के प्रजनन-सांड चुने जा सकें।

भविष्य के प्रजनन-सांड के रूप में चुने गए युवा बछड़े की कीमत लगभग ₹25 बताई गई है। पूर्ण विकसित होने के बाद प्रजनन-सांड सामान्यतः बेचे नहीं जाते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 20 | पीडीएफ पृ. 32.

## राठ बैल का सामान्य गठन

राठ बैल को पर्याप्त बड़ा, मजबूत और सक्रिय पशु बताया गया है। यह परिवहन कार्य और कई मामलों में भारी सैन्य रसद-कार्य के लिए भी उपयुक्त माना गया था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 20 | पीडीएफ पृ. 32.

## सिर, माथा, नाक, आँख और कान

चेहरा सिर के ऊपरी पिछला भाग से थूथन तक बिल्कुल सीधा और समतल है। पूर्ण विकसित पशुओं में माथा बाहर की ओर उभरने की प्रवृत्ति नहीं दिखाता। 3 वर्ष या उससे कम आयु के पशुओं में माथा थोड़ा उभरा हो सकता है, जो परिपक्वता के साथ सीधा हो जाता है।

नाक की हड्डियाँ कुछ चौड़ी और भारी हैं। थूथन में विशिष्ट ऊपर की ओर उठाव होता है, जिससे नाक ऊपर उठी नाक वाला अथवा ऊपर उठी हुई दिखाई देती है; सामने से देखने पर कई पशुओं में निचला होंठ स्पष्ट दिखाई देता है। ऊपरी होंठ महीन और चलायमान है। आँखें खुली हुई और गहरे रंग की पलकों से स्पष्ट सीमांकित हैं, जैसा नागौरी में भी दर्ज है। कान छोटे और लटकते हुए हैं तथा उनका भीतरी भाग आगे की ओर रहता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 20 | पीडीएफ पृ. 32.

## सींग, गर्दन, कुकुद और आगे का भाग

सींग सीधे ऊपर उठते हुए और भीतर की ओर मुड़ते हैं; लेखक उनकी तुलना इंग्लिश शॉर्टहॉर्न के सींगों से करता है। गर्दन पर्याप्त लंबी है, गलकम्बल छोटा है और कुकुद पर्याप्त विकसित है। नागौरी की तुलना में कुकुद अधिक पीछे स्थित होता है।

कंधे बहुत गहरे हैं। पैर सीधे हैं, हालांकि कभी-कभी खुरों के अग्रभाग बाहर की ओर मुड़ने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। खुर छोटे और सघन हैं, जो मेवात गोवंश के चौड़े और फैले हुए खुर से भिन्न बताए गए हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 20 | पीडीएफ पृ. 32.

## धड़, पीठ, पिछला भाग, पूँछ और पिछले पैर

छाती का घेरा गहरा और पसलियाँ अच्छी तरह गोल हैं। पीठ छोटी है और कमर शक्तिशाली हैं, जो अच्छे आकार के पिछला भाग में मिलती हैं। पूँछ का लगाव अच्छा नहीं बताया गया है, जिससे पिछला भाग में कुछ ढलाव-सा प्रभाव दिखाई देता है।

पूँछ छोटी और महीन है तथा पिछले जोड़ के थोड़ा नीचे काले बालों के गुच्छे पर समाप्त होती है। चित्र-पट्ट में दिखाए दोनों बैलों में ऊपर उठी हुई नाक स्पष्ट दिखाई देने की बात लेखक विशेष रूप से नोट करता है। पिछली जाँघें, पिछले जोड़ और पिछले पैर अच्छी तरह बने हुए हैं और लिंगावरण बहुत छोटा है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 20–21 | पीडीएफ पृ. 32, 35.

# राठ गाय (Rath Cow)

सोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

(Plate IX)

स्थान: बहरोड़

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

## रंग और नागौरी-मेवाती से तुलना

प्रमुख रंग सफेद या धूसर बताया गया है। राठ को मेवाती बैलों से श्रेष्ठ माना जाता था। लेखक एक स्थानीय कथन दर्ज करता है कि “राठ 20 वर्ष काम करता है और मेवाती 15 वर्ष।”

राठ को नागौरी जितना अच्छा नहीं माना गया, लेकिन किसानों को यह इसलिए पसंद था कि यह आकार में छोटा, कम खाने वाला और अधिक सहनशील था। लेखक इसे 'गरीब आदमी का बैल' और नागौरी को 'अमीर आदमी का बैल' कहे जाने की स्थानीय तुलना दर्ज करता है; नागौरी विशेष रूप से बनिया वर्ग में तेज तेज दुलकी चाल वाले मझोलियाँ के लिए बहुत मूल्यवान था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 21 | पीडीएफ पृ. 35.

## राठ सांड

सांड मध्यम आकार, ठोस शरीर और मजबूत गठन वाला बताया गया है। सामान्य लक्षण बैलों जैसे ही हैं, लेकिन सींग अधिक मोटे और अपेक्षाकृत छोटे, कुकुद बहुत बड़ा और पिछला भाग बेहतर होते हैं। पूँछ का लगाव भी अधिक संतुलित बताया गया है।

लेखक कोई माप नहीं ले सका, क्योंकि उसने ऐसा कोई सांड नहीं देखा जो कभी बाँधा या हाथ से संभाला गया हो। सांड में गर्दन और कंधों का रंग प्रायः शरीर के बाकी भाग से गहरा होता है; यह बात बैलों में कम दिखाई देती है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 21 | पीडीएफ पृ. 35.

## राठ गाय

गायें सांडों और बैलों की तुलना में छोटी हैं। उनके सींग छोटे और महीन हैं तथा कान बैलों की तुलना में अपेक्षाकृत बड़े हैं। उन्हें बहुत सक्रिय और सहनशील छोटे पशु बताया गया है।

वे कम दूध देने वाली हैं। दुग्ध-उद्देश्य के लिए रखने पर भी अधिकतम दूध-उत्पादन 8 सेर (लगभग 7.5 किलोग्राम, तत्कालीन ब्रिटिश-भारतीय मानक के आधार पर) बताई गई है। प्रमुख रंग धूसर या स्लेटी है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 21 | पीडीएफ पृ. 35.

## काम करने की क्षमता

राठ बैल हल, कुएँ और गाड़ी के काम में बहुत अच्छे माने गए हैं। क्षेत्र की भारी रेत में शक्तिशाली और सक्रिय बैलों की आवश्यकता थी और राठ इस प्रकार की भूमि के लिए अच्छी तरह अनुकूल बताया गया है।

वे नागौरी जितने तेज या शक्तिशाली नहीं थे और नागौरी को दी जाने वाली असाधारण दूरी की क्षमता नहीं रखते थे; फिर भी वे प्रतिदिन लगभग 10 घंटे स्थिर रूप से काम कर सकते थे और भारी रेत में लगभग 20 मील (लगभग 32.2 किमी) प्रतिदिन चल सकते थे।

स्थानीय किसानों का कहना था कि इस गति से एक जोड़ी लगभग 12 मन (लगभग 448 किलोग्राम, तत्कालीन ब्रिटिश-भारतीय मानक के आधार पर) भार खींच सकती थी। तुलना में नागौरी उसी समय में 40 मील तक जा सकता था, लेकिन लगभग 6 मन भार खींचता था।

काम के सामान्य घंटे सुबह 6 बजे से दोपहर 12 बजे तक और फिर दोपहर 2 बजे से शाम 6 बजे तक बताए गए हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 21 | पीडीएफ पृ. 35.

## दूध देने की अवधि और आहार का प्रभाव

साधारण गाय, जो मुख्यतः चराई पर निर्भर रहती और बहुत थोड़ा अतिरिक्त आहार पाती थी, लगभग 5 सेर (लगभग 4.7 किलोग्राम) दूध देती थी। यदि चराई के अतिरिक्त उसे बैल के समान अच्छा राशन दिया जाए तो दूध-उत्पादन लगभग 8 सेर (लगभग 7.5 किलोग्राम) तक पहुँच सकती थी।

ब्याने के बाद गाय लगभग 4 महीने तक पूर्ण दुग्धावस्था में रहती थी; इसके बाद दूध-उत्पादन धीरे-धीरे कम होती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 22 | पीडीएफ पृ. 36.

# राठ बैल (Rath Bullocks)

स्रोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्द्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

(Plate X)

स्थान: बहरोड़ के पास

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

## गाँव की प्रजनन-सांड व्यवस्था

प्रत्येक गाँव में 1 या अधिक सांड रखे जाते थे, लगभग 1 सांड प्रति 100 गायें के अनुपात में। व्यवस्था गाँव वाले स्वयं करते थे। सामान्यतः किसी धार्मिक धार्मिक पर्व पर कोई परोपकारी बनिया सांड को खुला छोड़ता था, अथवा किसी धनी व्यक्ति की मृत्यु पर उसका रिश्तेदार ऐसा करता था।

बछड़ा का चयन गाँववाले की सर्वसम्मति से होता था और इस कारण सामान्यतः अच्छा बछड़ा चुना जाता था। चयन लगभग 2 वर्ष की आयु में होता था। इसके बाद सांड सार्वजनिक संपत्ति की तरह रखा जाता, उसे चराई का स्वतंत्र अधिकार होता और वह अपने झुंड के साथ रहता था। गायों को किसी विशेष सांड से नहीं मिलाया जाता था; उपलब्ध सामुदायिक सांड ही झुंड के साथ रहता था।

जमींदार गाय की गुणवत्ता को बहुत अधिक महत्व नहीं देता था; यदि सांड अच्छा हो तो वह संतुष्ट माना जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 22 | पीडीएफ पृ. 36.

## बधियाकरण, कीमतें और रोग

सांडों का बधियाकरण लगभग 2½–3 वर्ष की आयु में मसलने पद्धति से किया जाता था।

| श्रेणी | 1911 में दर्ज कीमत |
|---|---|
| गाय | ₹10–₹50 |
| बैल की जोड़ी | ₹200–₹300 |
| झुंड सांड के लिए चुने बछड़ा के मालिक को दिया जाने वाला मूल्य | ₹30–₹80 |

सांड सामान्य बिक्री के लिए नहीं बेचे जाते थे; झुंड सांड के रूप में किसी बछड़ा को लेने पर दाता उसके मालिक को ₹30–₹80 दे सकता था।

रोगों में रिंडरपेस्ट, जिसे स्रोत में “बड़ा रोग” कहा गया है, और खुरपका-मुँहपका, जिसे “माता की बाहर” लिखा गया है, का उल्लेख है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 22 | पीडीएफ पृ. 36.

## राठ गोवंश की मूल माप-तालिका

मूल रिपोर्ट में सभी माप इंच में दिए गए हैं। नीचे वही आँकड़े रखे गए हैं; जहाँ स्रोत में माप नहीं लिए जा सके, वही बात दर्ज की गई है।

| पशु | ऊँचाई | शरीर लंबाई | छाती घेरा | पिंडली घेरा | पिंडली लंबाई | सींग | चेहरा | माथा | आयु | रंग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राठ बैल 26 | 61 | 65 | 80 | 9 | 7 | 12½ | 21 | 7 | 5 | सफेद |
| राठ बैल 27 | 60 | 63 | 81 | 9 | 7½ | 13 | 22 | 7½ | 5 | सफेद |
| राठ बैल 28 | 56½ | 56 | 73 | 8 | 6½ | 6 | 19½ | 7½ | 3½ | सफेद |
| राठ बैल 29 | 56½ | 56 | 72 | 7 | 7 | 13½ | 21 | 7 | 5 | सफेद |
| राठ गाय 30 | 48 | 55 | 57 | 6 | 6 | 4 | 18 | 6 | 5 | सफेद |
| राठ गाय 31 | 48 | 59 | 59 | 6 | 6½ | 5 | 17 | 5½ | 8 | सफेद |
| राठ सांड 32 | माप नहीं लिए जा सके |  |  |  |  |  |  |  |  | स्लेटी |
| राठ सांड 34 | माप नहीं लिए जा सके |  |  |  |  |  |  |  | 7 | — |
| राठ गाय 33 | 51 | 48 | 64 | 6½ | 6½ | 7 | 17 | 6 | 5 | स्लेटी |

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 23 | पीडीएफ पृ. 37.

माँ है, शब्दों से नहीं,
आँखों से बोलती है।
इसके सीने पर अपना कान लगाओ तो सही।
हर धड़कन में दुलार है,
कुछ देर तुम भी इससे बतलाओ तो सही।
तुम्हारे हर दर्द को अपने में समेट लेगी,
बस माँ कहकर इससे लिपट जाओ तो सही।
गौ माता राष्ट्रमाता
सेवा करें
संरक्षण करें
संवर्धन करें
www.surbhisewa.com